

મહિંસા પરમો ધર્મઃ

(Forgiveness in Sanātana Dharmā)



Mahabharata Vana Parva, Adhyaya 29, highlights the profound importance and value of forgiveness.

अन्ये वै यजुषां लोकाः कर्मिणामपरे तथा ।

क्षमावतां ब्रह्मलोके लोकाः परमपूजिताः ॥ ३९ ॥

(सकामभावसे) यज्ञकर्मीका अनुष्ठान करनेवाले पुरुषोंके लोक दूसरे हैं एवं (सकामभावसे) वापी, कूप, तडाग और दान आदि कर्म करनेवाले मनुष्योंके लोक दूसरे हैं। परंतु क्षमावानोंके लोक ब्रह्मलोकके अन्तर्गत हैं; जो अत्यन्त पूजित हैं ॥ ३९ ॥

क्षमा तेजस्विनां तेजः क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम् ।

क्षमा सत्यं सत्यवतां क्षमा यज्ञः क्षमा शमः ॥ ४० ॥

क्षमा तेजस्वी पुरुषोंका तेज है, क्षमा तपस्वियोंका ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषोंका सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा शम (मनोनिग्रह) है ॥ ४० ॥

तां क्षमां तादृशीं कृष्णे कथमस्मद्विधस्त्यजेत् ।

यस्यां ब्रह्म च सत्यं च यज्ञा लोकाश्च धिष्ठिताः ॥ ४१ ॥

कृष्णे! जिसका महत्त्व ऐसा बताया गया है, जिसमें ब्रह्म, सत्य, यज्ञ और लोक सभी प्रतिष्ठित हैं, उस क्षमाको मेरे-जैसा मनुष्य कैसे छोड़ सकता है ॥ ४१ ॥

क्षन्तव्यमेव सततं पुरुषेण विजानता ।

यदा हि क्षमते सर्वं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ ४२ ॥

विद्वान् पुरुषको सदा क्षमाका ही आश्रय लेना चाहिये। जब मनुष्य सब कुछ सहन कर लेता है, तब वह ब्रह्मभावको प्राप्त हो जाता है ॥ ४२ ॥

There are other worlds for those who perform sacrifices, and also for those who perform acts of charity, and for those who study the Vedas. But the world of those who possess forgiveness is the world of Brahman, which is highly revered

"Forgiveness is the might of the mighty; forgiveness is the supreme asceticism; forgiveness is the truth of the truthful; forgiveness is the sacrifice; forgiveness is the restraint of the mind."

Where is there any merit greater than forgiveness, O Krishna? It is the only means to Brahman, truth, sacrifice, and the worlds."

"How can someone like me forsake forgiveness, which has been described as such by the wise, and which is firmly established in Brahman, truth, sacrifice, and all worlds?"

"Intelligent men should always seek refuge in forgiveness. When a man practices forgiveness, he attains the highest state of Brahman."

अभिषक्तो ह्यभिषजेदाहन्याद् गुरुणा हतः ।

एवं विनाशो भूतानामधर्मः प्रथितो भवेत् ॥ २६ ॥

यदि कोई अपनेको सतावे तो स्वयं भी उसको सतावे। औरोंकी तो बात ही क्या है, यदि गुरुजन अपनेको मारें तो उन्हें भी मारे बिना न छोड़े; ऐसी धारणा रखनेके कारण सब प्राणियोंका ही विनाश हो जाता है और अधर्म बढ़ जाता है ॥ २६ ॥

"If someone torments you, you should also torment them. What to say of others, if a guru (teacher, elder) attacks you, you should not leave them without attacking back. This kind of belief leads to the destruction of all living beings and increases unrighteousness."

आक्रुष्टस्ताडितः क्रुद्धः क्षमते यो बलीयसा ।

यश्च नित्यं जितक्रोधो विद्वानुत्तमपुरुषः ॥ ३३ ॥

जो बलवान् पुरुषके गाली देने या कुपित होकर मारनेपर भी क्षमा कर जाता है तथा जो सदा अपने क्रोधको काबूमें रखता है, वही विद्वान् है और वही श्रेष्ठ पुरुष है ॥ ३३ ॥

"He who forgives even when abused or struck by a stronger person, who always controls his anger, is truly wise and is the greatest of men."

अत्राप्युदाहरन्तीमा गाथा नित्यं क्षमावताम् ।

गीता: क्षमावता कृष्णे काश्यपेन महात्मना ॥ ३५ ॥

इस विषयमें जानकार लोग क्षमावान् पुरुषोंकी गाथाका उदाहरण देते हैं। कृष्णे!
क्षमावान् महात्मा काश्यपने इस गाथाका गान किया है ॥ ३५ ॥

क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः क्षमाः श्रुतम् ।

य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति ॥ ३६ ॥

क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है,
वह सब कुछ क्षमा करनेके योग्य हो जाता है ॥ ३६ ॥

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्यं क्षमा भूतं च भावि च ।

क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत् ॥ ३७ ॥

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा शौच
है। क्षमाने ही सम्पूर्ण जगत्को धारण कर रखा है ॥ ३७ ॥

अति यज्ञविदां लोकान् क्षमिणः प्राप्नुवन्ति च ।

अति ब्रह्मविदां लोकानति चापि तपस्विनाम् ॥ ३८ ॥

क्षमाशील मनुष्य यज्ञवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता और तपस्वी पुरुषोंसे भी ऊँचे लोक प्राप्त करते
हैं ॥ ३८ ॥

O Krishna, the illustrious and forgiving Kashyapa has, in this respect, sung the following verses in honour of men that are ever forgiving
'Forgiveness is virtue; forgiveness is sacrifice, forgiveness is the Vedas, forgiveness is the Shruti. He that knows this is capable of forgiving everything. Forgiveness is Brahman; forgiveness is truth; forgiveness is stored ascetic merit; forgiveness protects the ascetic merit of the future; forgiveness is asceticism; forgiveness is holiness; and by forgiveness is it that the universe is held together. Persons that are forgiving attain to the regions obtainable by those that have preformed meritorious sacrifices, or those that are well-conversant with the Vedas, or those that have high ascetic merit

क्षमावतामयं लोकः परश्चैव क्षमावताम् ।

इह सम्मानमृच्छन्ति परत्र च शुभां गतिम् ॥ ४३ ॥

क्षमावानोंके लिये ही यह लोक है। क्षमावानोंके लिये ही परलोक है। क्षमाशील पुरुष
इस जगत्में सम्मान और परलोकमें उत्तम गति पाते हैं ॥ ४३ ॥

This world belongs to the forgiving, and so does the next world. The forgiving are honored in this world, and they achieve the highest state in the next

एतदात्मवतां वृत्तमेष धर्मः सनातनः ।

क्षमा चैवानृशंस्यं च तत् कर्तास्म्यहमञ्जसा ॥ ५२ ॥

क्षमा और दया यही जितात्मा पुरुषोंका सदाचार है और यही सनातनधर्म है, अतः मैं
यथार्थ रूपसे क्षमा और दयाको ही अपनाऊँगा ॥ ५२ ॥

"Forgiveness and compassion are the eternal duties of the virtuous. These qualities represent the conduct of the self-realized souls, and this is the eternal dharma (duty). Therefore, I will truly adopt forgiveness and compassion.

In Mahabharata Anushasana Parva, Adhyaya 117, the significance of non-violence is powerfully emphasized.

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परो दमः ।

अहिंसा परमं दानमहिंसा परमं तपः ॥ २८ ॥

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम संयम है, अहिंसा परम दान है और अहिंसा परम तपस्या है ॥

अहिंसा परमो यज्ञस्तथाहिंसा परं फलम् ।

अहिंसा परमं मित्रमहिंसा परमं सुखम् ॥ २९ ॥

अहिंसा परम यज्ञ है, अहिंसा परम फल है, अहिंसा परम मित्र है और अहिंसा परम सुख है ॥ २९ ॥

सर्वयज्ञेषु वा दानं सर्वतीर्थेषु वाऽऽप्लुतम् ।

सर्वदानफलं वापि नैतत्तुल्यमहिंसया ॥ ३० ॥

सम्पूर्ण यज्ञोंमें जो दान किया जाता है, समस्त तीर्थोंमें जो गोता लगाया जाता है तथा सम्पूर्ण दानोंका जो फल है—यह सब मिलकर भी अहिंसाके बराबर नहीं हो सकता ॥ ३० ॥

अहिंसस्य तपोऽक्षय्यमहिंसो यजते सदा ।

अहिंसः सर्वभूतानां यथा माता यथा पिता ॥ ३१ ॥

जो हिंसा नहीं करता, उसकी तपस्या अक्षय होती है। वह सदा यज्ञ करनेका फल पाता है। हिंसा न करनेवाला मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियोंके माता-पिताके समान है ॥ ३१ ॥

एतत् फलमहिंसाया भूयश्च कुरुपुंगव ।

न हि शक्या गुणा वक्तुमपि वर्षशतैरपि ॥ ३२ ॥

कुरुश्रेष्ठ! यह अहिंसाका फल है। यही क्या, अहिंसाका तो इससे भी अधिक फल है। अहिंसासे होनेवाले लाभोंका सौ वर्षोंमें भी वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ ३२ ॥

"Non-violence is the highest sacrifice, Non-violence is the
greatest strength.

Non-violence is the highest friend, and Non-violence is the
greatest happiness.

Non-violence is the highest truth, and Non-violence is the
greatest learning."

"Non- Violence is the highest Dharma

Non- Violence is the greatest self-control.

Non - Violence is the highest gift

Non- Violence is the greatest penance

The giving in all sacrifices, and the bathing in all holy waters,

Even the fruits of all gifts, are not equal to non-violence."

"Non-violence is the eternal penance; one who practices
non-violence always worships.

Non-violence is to all beings as a mother is, as a father is.

"This is the fruit of non-violence, O Kurus! Indeed, non-
violence yields even greater rewards than this. The
benefits of non-violence cannot be described even in
hundreds of years

Shukla Yajur Veda 36.17 offers a heartfelt prayer for the peace and prosperity of the entire world and all of humanity.

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः.
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा
मा शान्तिरेधि.. (१७)

स्वर्गलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. अंतरिक्षलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. पृथ्वीलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. जल देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. ओषधि देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. वनस्पति देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. सब देवगण हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. परब्रह्म हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. शांति भी हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. (१७)

May the sky be peaceful; may the mid-space be peaceful;
may the earth be peaceful; may the waters be peaceful;
may the annual plants be peaceful; may the forests be peaceful; may all the bounties of Nature be peaceful; may the knowledge be peaceful; may all the things be peaceful;
may there be peace and peace only; may such a peace come to me.

Shukla Yajur Veda 36.18 encourages us to view everyone with a sense of friendliness and goodwill.

दृते दृ ३४ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्.
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे.
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे.. (१८)

हे परमात्मा! आप दृढ़ हैं. आप हमें दृढ़ बनाने की कृपा कीजिए. हम मित्रभाव की दृष्टि से सभी प्राणियों को देख सकें. सभी प्राणी हमें मित्र भाव से देख सकें. (१८)

O Lord, make me firm in times of distress. May all the beings look at me with a friendly eye. May I see all the beings with a friendly eye. Thus may we all be looked at with a friendly eye

Maho Upanishad 6.72 says “Vasudhaiva Kutumbakam” meaning that the whole family is one single family

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। भावाभावविनिर्मुक्तं जरामरणवर्जितम् ॥

Atharva Veda 10.1.29 declares that the murder of an innocent being is the most grievous act.

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः.

यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव.. (२९)

निरपराध की हत्या करना भयंकर कर्म है. तू हमारी गायों, अश्वों, और पुरुषों की हत्या मत कर. तुझे जहांजहां स्थापित किया गया है, वहांवहां से हम तुझे हटाते हैं. तू पत्ते से भी हलकी हो जा. (२९)

Murder of the innocents is heinous, O force of sin, evil and mischief. Do not hit, do not kill our cow, horse or person. Wherever you be, covert in our midst, we discover and dislodge you from there. Be lighter than a dead leaf and fly away.

Manu Smriti 8.345–346 describes violence as the gravest of all wrongdoings.

He who commits violence is to be regarded as the worst offender, as compared to one who is wicked of speech, to a thief and to one who hurts with a staff.

The king who condones the perpetrator of violence quickly falls into destruction and incurs hatred.—(346)